स्वामी विवेकानन्द के सामाजिक समरसता और राष्ट्रप्रेम सम्बन्धी विचार

डॉ0 वीरेन्द सिंह यादव,

एसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ0शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ

शोध सारांश

स्वामी विवेकानन्द राष्ट्र के निर्माण में समानता के सिद्धान्त पर बल देते हैं। आपके अनुसार आदर्श राष्ट्र वही होगा जिसमें सभी वर्ग समान हों। अपनी इसी विचाराधारा के कारण विवेकानन्द समाजवादी कहलाये। आपने देश के सभी निवासियों के लिए 'समान अवसर के सिद्धान्त का समर्थन किया। आपने लिखा कि ''यदि प्रकृति में असमानता है तो भी सबके लिए समान अवसर होना चाहिए अथवा यदि कुछ को अधिक तथा कुछ को कम अवसर दिया जाये तो दुर्बलों को सबलों से अधिक अवसर दिया जाना चाहिए। स्वामी विवेकानन्द जी व्यक्ति और राष्ट्र का आध्यत्मिक उत्थान करना चाहते थे। आपका मानना था कि प्रत्येक राष्ट्र के जीवन में एक तत्व प्रमुख होता है जो न केवल उसके अस्तित्व को बनाये रखता है वरन उसकी प्रगति की दिशा का निर्धारण भी करता है। भारतीय सन्दर्भ में यह तत्व धर्म है। विवेकानन्द का विश्वास था कि 'भविष्य में धर्म ही भारतीय जीवन का मूल आधार ही नही, उसके नवोउत्थान का कारण भी सिद्ध होगा और कोई भी राष्ट्र अपने अतीत की अवहेलना करके महान नहीं बन सकता। भारत भी इसका अपवाद नही है। धर्म ही निरन्तर भारतीय जीवन का आधार रहा है इसलिए सभी सुधार कार्य धर्म के माध्यम से ही किये जाने चाहिए।

KEY WORDS: *स्वामी विवेकानन्द, धर्म,सामाजिक समरसता ,राष्ट्रप्रेम, मानव जीवन का निर्माण ,विचारधारा।*

स्वामी जी के शिक्षा दर्शन का मुख्य उद्देश्य मानव जीवन का निर्माण करना है। अतः स्वामी जी के अनुसार वही शिक्षा, शिक्षा है जो मानव का निर्माण करके उसे फल सिद्धि के लिए सक्षम बनाये। इसके साथ ही स्वामी विवेकानन्द जी ने पाश्चात्य देशों की उन्नति का प्रमुख कारण तकनीकी और औद्योगिक शिक्षा को माना है। आप भारत की प्रचलित शिक्षा–प्रणाली बदलकर उसके स्थान पर जीविकोपार्जन प्रदान करने वाली शिक्षा की व्यवस्था करना चाहते थे। आपके अनुसार वर्तमान शिक्षा व्यवस्था लोगों को नौकरीपरक व बेरोजगार बना रही है। अतः उन्हें पाश्चात्य विज्ञान अर्थात् व्यावसायिक, तकनीकी, औद्योगिक तथा यांत्रिक शिक्षा दी जानी चाहिए। इससे भारतवासी आत्म–निर्भर बनेंगे तथा विश्व के विकसित देशों की भाँति अपना विकास कर सकेंगे। स्वामी विवेकानन्द शिक्षा द्वारा लोगों के चरित्र–निर्माण के पक्ष में थे। क्योंकि एक चरित्रवान व्यक्ति अनुशासित एवं आत्मनिर्भर होता है। आपका कहना था कि हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है,जिससे चरित्र का निर्माण हो। स्वामी जी शिक्षा के माध्यम से लोगों का शारीरिक विकास करना चाहते थे। क्योंकि जो व्यक्ति शरीर से सबल है वह सब कार्य करने में सक्षम है। वह अपनी उन्नति कर सकता है और दूसरे की मदद भी।

स्वामी विवेकानन्द जी ने धर्म के आधार पर भी कहा कि किसी भी धर्म में नहीं लिखा है कि विवाद करो वरन प्रत्येक धर्म हमें शान्ति के मार्ग पर चलना सिखाता है। आपने भविष्यवाणी

करते हुए जार देकर कहा कि आने वाले काल में जिसमें लिखा होगा भविष्य में धर्म विवाद नहीं शान्ति विकास चाहता है। आपने साफ शब्दों में कहा कि धर्म के मूल में न तो कर्म काण्ड, तीर्थ, उत्सव, मंहगे आयोजन नहीं बल्कि कमजोर और असहाय लोगों की सेवा और सुश्रुषा करना है। आपकी नजरों में ईश्वर वही है जो कि गरीबों, दुखी मानवता व अन्य संकटग्रस्त जीवों की सेवा करते हैं। जिससे राष्ट्र भी उन्नति करेगा, क्योंकि राष्ट्र की अवनति में गरीब और कमजोर लोगों के शोषण व उपेक्षा हुयी, अतः युवाओं को इस क्रम में आगे आना होगा और पोथी एवं मोटी किताबें पढ़ने से कुछ नही होता वरन असहायों की सेवा करना ही महत्वपूर्ण है।

स्वामी विवेकानन्द जी ने भारतवासियों के लिये कहा कि 'हे भारतवासी भाइयों अच्छी तरह याद रखों की सीता सावित्री और दमयंती तुम्हारी जाति की देवियां हैं, हे वीर पुरूषों मर्द बनों और हुंकार और ललकार कर कहो की मैं भारतीय हूँ और सभी भारतीय (किसी भी जाति धर्म के हों) मेरे भाई हैं। भारत मेरे जीवन की प्राण वायु है' ऐसे उच्च विचार तभी प्राण वायु दे सकते हैं, जब इनको अपने कार्य क्षेत्र में लागू किया जाए।

विवेकानन्द स्वामी जी केवल तत्कालीन ऐतिहासिक महापुरूष नहीं हैं अपितु वे एक जीवन्त महाशक्ति थे, जो संसार की भलाई के लिए कार्यरत रहे। स्वामी विवेकानन्द जी स्वयं कहते हैं कि हो सकता है कि मैं इस शरीर के बाहर निकलकर इसे एक जीर्ण वस्त्र की नाई त्याग दूँ। किन्तु फिर भी मैं कार्य करना बन्द नहीं करूँगा। मैं तब तक लोगों को प्रेरणा देता रहूँगा जब तक कि यह संसार जान न जाये कि वह ईश्वर से अभिन्न है। '' स्वामी जी धर्म को व्यक्ति के जीवन की आत्मा मानते थे। परन्तु धर्म के प्रति आपकी परिभाषा बड़ी व्यापक है। आप किसी सम्प्रदाय विशेष को धर्म की संज्ञा देना उचित नहीं समझते थे। क्योंकि आपकी दृष्टि में धर्म एक साधना है, एक अनुभूति है, आत्मा से साक्षात्कार का माध्यम है। स्वामी जी का मानना था कि धर्म मनुष्य के हृदय में ज्ञान का प्रकाश आलोकित करता है जिसके माध्यम से हम उस परब्रह्म परमेश्वर तक पहुँच सकते हैं।

भारत में सम्प्रति जितने दार्शनिक सम्प्रदाय हैं, वे सभी वेदान्त दर्शन के अन्तर्गत आते हैं। वेदान्त दर्शन की बहुविध प्रकार से व्याख्याऐं की गयी हैं और वे प्रगतिशील भी रहीं हैं। वेदान्त का शाब्दिक अर्थ है वेद का अन्त। स्वामी जी ने भारतवासियों से कहा कि वेदान्त के सब महान तत्व केवल अरण्यों या पर्वतों की गुफाओं में ही सीमित न रहेंगे वरन् न्यायालयों में, उपासना गृहों में, गरीबों की कुटियों में, साधारण व्यक्तियों के घरों में, छात्रों की पाठशाला में, सर्वत्र वे तत्व आलोकित तथा कार्यरूप में परिणत होंगे।

विवेकानन्द स्वामी जी ने अंततः अपने व्याख्यानों के माध्यम से वेदान्त दर्शन को सर्वश्रेष्ठ धर्म दर्शन सिद्ध कर दिया। भारत की धार्मिक चेतना ने उनके द्वारा पश्चिम में स्वयं को अभिव्यक्त किया। स्वामी जी ने सम्पूर्ण भारत वर्ष को अपनी भावधारा से एक सूत्र में बॉध दिया। स्वामी विवेकानंद जी के द्वारा भारतीय संस्कृति, वेदान्त–दर्शन और हिन्दू–धर्म की व्याख्या सुनकर एक ओर पाश्चात्य जगत में भारत के सम्बन्ध में फैली निर्मूल भ्रान्तधारणाओं का अन्त हुआ तो दूसरी ओर सम्पूर्ण हिन्दू जगत में नवीन धार्मिक चेतना, आत्मगौरव और आत्मविश्वास का संचार हुआ और यही कारण था कि जब स्वामी जी अमेरिका से भारत लौटे तो देशवासियों ने उन्हें सिरमौर बना लिया।

तत्कालीन युग की सबसे बड़ी मांग राष्ट्रवाद' थी, जिसे स्वामी विवेकानन्द ने अपनी ओजस्वी वाणी में व्यक्त किया। यह 'राष्ट्रवाद कोई अमूर्त और संकीर्ण अवधारणा नहीं है। वह

विश्व–बन्धुत्व से ओत–प्रोत है, जिसके मूल में भारत की सनातनता एवं सन्तानों का हित निहित हैं। इसीलिए कन्या कुमारी में अपनी समाधि से उठकर आप कहा था कि ''मैने देखा है कि भारत माता ओर जगदम्बा में कोई भेद नहीं है। भारत माता की पूजा ही जगदम्बा की पूजा है। भारतमाता की सेवा का अर्थ है, भारत की सन्तान की सेवा।'' शिकागो की धर्म संसद में अपने विश्व–विख्यात व्याख्यान के पश्चात प्रसिद्धि के शिखर पर अवस्थिति स्वामी विवेकानंद का मन मर्मान्तक पीड़ा से भर उठता है– 'ओह माँ! नाम और प्रसिद्धि लेकर मै क्या करूंगा, जब मेरी मातृभूमि अत्यन्त गरीब है। कौन भारत के गरीबों को उठायेगा? कौन उन्हें रोटी देगा? हे माँ मुझे रास्ता दिखाओं, मै कैसे उनकी सहायता करूँ? इस प्रकार आपका राष्ट्रवाद आमजन का अपना राष्ट्रवाद है जो स्वतन्त्रता, समानता और बन्धुत्व पर आधारित है। स्वामी विवेकानन्द स्वतन्त्रता के प्रबल पक्षधर हैं। आपके अनुसार 'स्वाधीनता ही विकास की पहली शर्त है।' लन्दन के एक व्याख्यान में आपने कहा था, 'यह विश्व क्या है? स्वतन्त्रता में इसका उदय होता है और स्वतन्त्रता पर ही यह अवलम्बित है।' यह बात उन्होंने सिंह की मांद में घुसकर ललकार के स्वर में कही थी क्योंकि ब्रिटेन उस समय सबसे बड़ा साम्राज्यवादी देश था। आपने 'चार जुलाई' शीर्षक कविता में स्वतंत्रता को पूरी दुनिया में छा जाने की मूर्त कल्पना की है। एक जीवन–मूल्य के रूप में स्वतन्त्रता की तभी सार्थकता है जब वह सामाजिक समानता पर आधारित हो। इसलिए स्वामी विवेकानन्द जी सामाजिक भेदभाव का तीव्र स्वर में खण्डन किया। आप लिखते हैं कि 'हम हिन्दू भी नहीं और वेदान्तिक भी नहीं हैं, असल में हम हैं छुआ–छूत पन्थी। रसोई घर हमारा मंदिर है। पकाए जाने वाले बर्तन उपास्य देवता हैं और मत छुओ, मत छुओ, हमारा मन्त्र है। हमें समाज के इस अन्ध कुसंस्कार को शीघ्र दूर करना होगा और वह एकमात्र उपनिषदों के उदार मतों द्वारा ही हो सकता है। वेदान्तों के उन सब महान तत्वों को अब जंगलों और गुफाओं से बाहर लाना होगा और न्यायालयों, प्रार्थना स्थलों, मंदिरों और गरीबों के झोपड़ों में प्रवेश कर अपना कार्य करना होगा।'' स्पष्टता यहाँ आपका जोर ज्ञान को क्रियात्मक परिणति तक ले जाने पर है क्योंकि आप मानते थे कि केवल भाषण देने से दुनिया की भलाई नहीं होगी। उसमें बदलाव लाकर समता स्थापित करनी होगी। इसलिए आपने गरीब और दलित जनता के उत्थान में सहायता देने के लिए अपने देश–वासियों तथा अन्य मिशनरियों को प्रेरणा दी। आपने कहा– 'आओ हममें से प्रत्येक व्यक्ति दिन और रात उन करोड़ों पद दलित भारतीयों के लिए प्रार्थना करें जो गरीब, पुरोहितों के छल और नाना अत्याचारों द्वारा जकड़े हुए हैं। उन्हीं के लिए दिन रात प्रार्थना करो। मैं उच्च और धनिकों की अपेक्षा उनको उपदेश देने की चिन्ता करता हूँ।'

स्वामी विवेकानन्द जी ने स्पष्ट शब्दों में बाल विवाह का विरोध किया और घृणित दृष्टि से देखते हुये तिरस्कार पूर्ण शब्दों में कहा कि यहां तो एक भिखमंगा भी चाहता है कि विवाह करके 10–12 गुलाम पैदा कर दूं क्योंकि उस

समय देश अंग्रेजों की गुलामी में जी रहा था। आपने ये भी कहा कि भाषण आदि देने से विश्व के मानव की भलाई नहीं होगी। उसमें परिवर्तन करते हुये समता की स्थापना करनी चाहिये। आपने जीवन को संघर्ष के रुप में स्थापित किया और कहा कि जीवन से संघर्ष समाप्त होने का मतलब मरण होगा अर्थात् यह जीवन उसकी संजीवनी बूटी का काम करता है। यह बात स्वामी जी ने गुलाम भारत के लिये कही थी लेकिन गुलामी खत्म होने के 65 वर्षों बाद भी कमोबेस वही स्थिति बनी हुयी है।

स्वामी जी ने आगे चलकर कहा–'मैं दार्शनिक नहीं हूँ। तत्व वेत्ता नहीं हूँ। कोई सन्त भी नहीं हूँ। मै दरिद्र हूँ और दरिद्रों को प्यार करता हूँ। अपनी इस प्रतिबद्धता को पूरा करने के लिए सन् 1897 ई0 में बेल्लूर (कोलकता) में स्वामी विवेकानन्द ने 'रामकृष्ण मिशन' की स्थापना की, जिसका प्रमुख ध्येय समाज सुधार और लोकसेवा की भावना है। और यह अपनी सेवाओं के लिए पूरे विश्व में आज भी स्मरण की जाती है।

संदर्भ ग्रथ सूची

- चौबे, प्रो0 एस0पी0, आधुनिक शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद,2010
- पाण्डेय, प्रो0 रामशकल, प्राचीन भारत के शिक्षा मनीषी, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद,2008
- जैन, प्रदीप कुमार, विद्यामेद्य, विद्या प्रकाशन मन्दिर लि0, प्रेस यूनिट, टी0 पी0 नगर, मेरठ ,2009
- झा, राकेश कुमार, योजना, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, जनवरी 2010, जनवरी 2013
- स्वामी विवेकानंद का शिकागो में धर्म सम्मलेन भाषण ,११ सितम्बर १८९३
- शर्मा डॉ0 योगेंद्र,भारतीय राजनीतिक चिंतन,डा0 सी0 एल0 बघेल, अलका प्रकाशन, कानपुर 2005
- सिंह, डॉ0 ओ0 पी0,शिक्षा दर्शन एवं शिक्षा शास्त्री, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद,2012
- सिंह, डॉ0 कर्ण ,विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षा, गोविन्द प्रकाशन, लखीमपुर–खीरी,2011–12